ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

# स्वामी विवेकानन्द के रामकृष्ण मिशन का सामाजिक उत्थान में योगदान

**प्रीति** शोधार्थी, आई.जी.यू. मीरपुर, रेवाड़ी, इतिहास विभाग

स्वामी विवेकानन्द के गुरू रामकृष्ण परमहंस ने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करने से पहले संसार में गरीब, दीन–दुखियों की सहायता व मानव कल्याण के लिए अपना अभियान चलाने के लिए धर्म संघ की स्थापना की थी। इस धर्म संघ के मुखिया या मुख्य कार्यकर्त्ता श्री विवेकानन्द जी ही थे। वे अपने मौलिक जीवन की सुख–सुविधाओं को छोड़कर जीवन के सत्य की खोज में अपने गुरू द्वारा बतायें गए रास्ते पर चलते रहे। उन्होंनं अपने जीवन में मानव की भलाई के लिए व दीन–हीन लोगों की सेवा के लिए खुब कार्य किया। अपने जीवन के आरम्भिक समय में वे मंठ में रहकर ही अपने गुरू भाईयों के साथ धर्म पर विचार–विमर्ष व वाद–विवाद करते थे। वे अपने गुरू द्वारा बताए गए मानव कल्याण के रास्ते पर चलकर मानवता की भलाई करके उनके द्वारा दी गई षिक्षा को ही अपने गुरू के प्रति श्रद्धांजलि मानते थे।[1] विवेकानन्द जी ने पहले मठ में रहकर अपने गुरू की षिक्षा–दीक्षा का प्रचार किया। उन्होंने 1888 में पहली बार सन्यासी वेष में मठ छोड़कर उत्तर भारत के कुछ बड़े शहरों की यात्रा की। उत्तर भारत के भ्रमण के बाद विवेकानन्द जी ने मध्य भारत व अन्य देष का भ्रमण किया। उन्होंने देखा लोग किस प्रकार से निर्धनता से झुंज रहे हैं। इस तरह समाज में कुपोशण व बिमारियां फैल रही है। लोग अशिक्षा के कारण बुराईयों में फस्ते जा रहे है। समाज में जो षिक्षित वर्ग (पुरोहित) वे लोगों को धर्म के नाम पर डरा रहे है।

समाज आडम्बरों मे फस्ता जा रहा है। इन सभी बातों ने विवेकानन्द की आत्मा व शरीर को हिला कर रख दिया। उस समय भारतीय लोगों को अंग्रेजों की यातनाओं का भी षिकार होना पड़ रहा था। हर दिन अंग्रेजों की दमनकारी नीति जन–जन को परेषान कर रही थी।[2] जिस समय विवेकानन्द भारत भ्रमण कर रहे थे। उस समय उन्हें 1893 ई0 में षिकांगो जो कि अमेरिका का शहर था। उसमें होने वाले विष्व धर्म सम्मेलन के बारे में पता चला। उन्होंने अपने साथियों व षिश्यों को अमेरिका में होने वाले विष्व धर्म सम्मेलन में शामिल होने की इच्छा जाहिर की। वह अमेरिका में होने वाले धर्म सम्मेलनन के माध्य से वह धर्म में फैली बुराईयो व अपने अच्छे विचारों को विष्व पटल पर रखना चाहते थे। वे भारत में गरीबी उन्मूलन का रास्ता खोजना चहाते थे।[3] इस विषय में उन्होंने कहा था।

> ''मैं सारे भारत में घूम चुका हूँ। पर हे बन्धुओं, वह मेरे लिए एक दारूण कश्टदायक अनुभव था, जब मैंने जन साधारण की भंयकर निर्धनता और पीड़ा को अपनी ऑखो से देखा। मैं अपने आंसू नही रोक सका। मेरा यह दृढ़ विष्वास है कि बिना लोगों की गरीबी और कश्ट दूर किये, उनमें धर्म का प्रचार करना बेईमानी है। इसकी कारण दरिद्र भारत की मुक्ति के साधन जुटाने के लिए मैं अमेरिका जाना चाहता हूँ।''[4]

इसी कार्य के लिए विवेकानन्द 31 मई 1893 ई0 को अमेरिका के लिए बुम्बई से 'पेनिनु सुलर' नामक जहाज में यात्रा के लिए निकले। यह जहाज पी0एण्ड0ओ कम्पनी का था। वे समुन्द्र के रास्ते श्रीलंका, सिंगापुर, हॉगकॉग, जापान तथा कनाडा होते हुए बहुत मुष्किलो का सामना करते हुए षिकागों पहुँचे। भाग्यवष उनकी मुलाकात रास्ते में मैसाचुसेट्स की महिला सहयात्री से हुई। वह महिला हावर्ड विष्व विद्यालय में कार्यरत प्रोफेसर की रिष्तेदार थी। प्रोफेसर का नाम जे0 एच0 राइट था। उन्होंने ही उस महिला के कहने से विवेकानन्द का विष्व धर्म सम्मेलन में भाग लेना सुनिष्चित करवाया था। 11 सितम्बर 1893 ई0 सोमवार के दिन षिकागों आर्ट इंस्टीटयूट के 'हॉल ऑफ कोलम्बर' में प्रातः काल 10 बजे दस धर्म–मतो प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हर धर्म की उपस्थिति एक बार घंटा ध्वनि बजाकर आरम्भ की गई। कुल दस बार घंटा ध्वनि हुई। इस सम्मेलन मे वैसे तो भारत के और भी प्रतिनिधि गए हुये थे। लेकिन विवेकानन्द जी किसी विषेश धर्म का या सम्प्रदाय का नेतृत्व नही कर रहे थे बल्कि पूरे भारत वर्श का नेतृत्व कर रहे थे।[5] जब स्वामी विवेकानन्द को बोलने का मौका मिला उनसे पहले चार धर्म प्रतिनिधि बोल चुके थे। स्वामी जी लिखते है।

> मेरे गेरिक वस्त्रों के कारण श्रोताओ का ध्यान किंचित आकृश्ट हुआ था। ..... जब मैंने 'मेरे अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों' कहते हुए सभा को सम्बोधित किया, तो इसके साथ ही दो मिनट तक करतल ध्वनि हुई और जब मैं अपना भाशण समाप्त करके बैठा तो भावावेष से मानो मैं अवष हो गया था। अगले दिन सभी समाचार पत्रों में छपा कि मेरा भाशण उस दिन सबसे अधिक मर्म–स्पर्षी बन पड़ा था। अतः पूरा अमेरिका मुझे जान गया। उसी दिन से मैं विख्यात हो गया और जिस दिन मैं हिन्दू धर्म पर बोला उस दिन तो हॉल में इतनी भीड़ हुई जितनी पहले कभी नहीं हुई थी''।[6]

अमेरिका के सभी अखबारों ने स्वामी जी की प्रसिद्धि यूरोप के अन्य देषों तक पहुँचा दी थी। इस बीच उन्हें यूरोप के कई देषों का दौरा किया। 20 फरवरी 1897 को वे कलकत्ता पहुँचे। कलकत्ता पहुंचने पर स्वामी जी का बहुत भव्य सम्मान समारोह किया गया। समारोह में युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा ''श्री रामकृश्ण की षिक्षाओं पर चलकर ही भारत का उत्थान हो सकता है। मैं तो अभी कुछ भी नहीं कर सका हूं। सब कुछ नौजवानों को ही करना होगा।

### रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकानन्द उपदेषों के माध्यम से हमेशा अपने गुरू भाईयों व षिश्यों को समझाते थे कि अगर हम मानव कल्याण के लिए कार्य व प्रचार–प्रसार न कर सकें तो श्रद्ध गुरू रामकृश्ण के जीवन आगमन के उद्देष्य व्यर्थ हो जाएगा। देष में इस समय गरीबी, बिमारियों व अंधविष्वास ने अपना प्रभाव जमा रखा है। समाज में एक दूसरे के प्रति सद्भावना का अभाव होता जा रहा है। इसलिए सभी व्यक्तियों से मैं निवेदन करता हूं कि मानवता के कल्याण के लिए कार्य करें।[7] विवेकानन्द आलम बाजार में व बाग बाजार के बलराम वसु महाषय के भवन में रहकर धर्म का प्रचार करने लगे। स्वामी जी अपने षिष्यों व गुरू भाईयों अर्थात् गुरू रामकृश्ण के भक्तों को एक मंच व एक विचारधारा के साथ जोड़कर आगे बढाने के लिए प्रयास कर रहे थे। 1 मई 1897 को गुरू रामकृश्ण परमहंस के सभी गृहस्थ भक्त व सन्यासी षिश्य बलराम जी के घर कलकत्ता में इकट्ठे हुए। विवेकानन्द जी ने सभी को सम्बन्धित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य को मजबूती से करने के लिए एक संगठित इकाई की आवष्यकता होती है। इसलिए हम सभी गृहस्थ व सन्यासी भक्तों को साथ लेकर मानव कल्याण के लिए एक ''रामकृश्ण मिषन'' नाम से एक संघ का गठन करते हैं।

### रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य

- रामकृष्ण मिषन नाम की संस्था का निर्माण।
- मानव जाति की नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए व्यवहार करने में सहायता करना।
- रामकृष्ण के उद्देष्यों व उन सत्यों का प्रचार करना जो मानवता के कल्याण के लिए अपने आचरण में लाना जरूरी है।
- रामकृश्ण मिषन का उद्देष्य सभी धर्मों को एक ही धर्म विधि रूप मानते हुए। उन सभी धर्म के अनुयायियों के बीच आपसी भाई–चारे की भावना स्थापित करना।[8]

### संस्था की कार्यप्रणाली व क्षेत्र

- रामकृष्ण द्वारा रचित वेदान्त और अन्य धार्मिक गतिविधियों का आमजन तक पहुँचाना।
- एक ऐसे लोगों को निपुण करना जो ऐसा ज्ञान या विज्ञान सिखाने में सक्ष्म हों। जिसमें जन साधारण का भौतिक और आध्यात्मिक पुनःनिर्माण हो सके।
- लघु उद्योग व षिल्पकार्य के द्वारा कठोर परिश्रम से अपना जीवन यापन करने वाले लोगों का मनोबल बढाना।[9]

वास्तव में विवेकानन्द द्वारा स्थापित इस सामाजिक संगठन का मुख्य उद्देश्य व कार्य तो यह था कि समाज में फैली कुरितियों को मिटाया जाए। गरीबी में अपना जीवन जी रहे लोगों की जीवनषैली में कुछ सुधार हो। समाज में जनकल्याण के कार्यों के माध्यम से समाजिक उत्थान हो। उस समय यही एकमात्र ऐसा संगठन था। जो विज्ञान में भी विष्वास रखता था। वह विज्ञान को साथ लेकर कार्य करने में भी कोई बुराई नहीं समझता था। स्वामी विवेकानन्द ने अपने मिषन का नाम ही अपने गुरू रामकृश्ण पर रखा बल्कि उसके आचार–विचारों को अपनी जीवनषैली में बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने रामकृश्ण द्वारा व्याखित सम्पूर्ण विचारधारा का मिषन द्वारा प्रचार प्रसार करवाया। वे स्वयं मिषन को सफल बनाने के लिए महासभापति बने। स्वामी ब्रह्मानन्द उसके सभापति और स्वामी योगानन्द उप–सभापति बने।

संगठन की स्थापना के बिल्कुल तुरन्त बाद जनकल्याण व वैदिक षिक्षा का प्रचार–प्रसार भी जोर–षोर से आरम्भ किया गया। स्वामी रामकृष्ण जी कहते थे ''मुझे कोई देवता न माना जाए–पहले ही समाज में बहुत सम्प्रदाय है। मैं कोई नया सम्प्रदाय नहीं बनाना चाहता हूं बल्कि मेरी नजरों में गरीब व बीमार मानव की सेवा करना ही सबसे बड़ा धर्म होगा। ''स्वामी जी ने रामकृष्ण मिषन को साथ लेकर बहुत से जनकल्याण कार्य किए। 30 मार्च 1898 में डॉक्टरों की सलाह पर स्वास्थ्य खराब होने के कारण विवेकानन्द जी दार्जिलिंग गए हुए थे। अभी कुछ स्वास्थ्य में सुधार हुआ भी नहीं था कि उन्हें कलकत्ता में एक बहुत ही भयानक बिमारी प्लेग फैलने का समाचार मिला। विवेकानन्द यह बात सुनकर अपने आपको रोक न पाए। वे बिमार अवस्था में ही कलकत्ता पहुंचे। यहां प्लेग के कारण बहुत सारी मृत्यु होने लग रही थी। लोग इस भयानक बिमारी से डरे हुए थे। लोग कलकत्ता से प्रस्थान कर रहे थे।

उन्होंने समय की नजाकत को देखते हुए सबसे पहले हिन्दी व बांग्ला भाषाओं में प्लेग के प्रति भ्रम पैदा करने वाली बातों का खण्डन किया। फिर उन्होंने घोशणा की

रामकृष्ण मिषन तुम्हारे साथ हैं। इस कष्ट के समय में जो भी धन राषि खर्च होगी वह करेगा। स्वामी जी ने कहा था '' अगर हमें मानव कल्याण के लिए प्लेग से मानवता की रक्षा के लिए अपने मठ भी बेचना पडें तो हम पीछे नहीं हटेंगे। हमारे लिए मानवता से बढकर कुछ भी नहीं है। हम साधु जैसे पहले जंगलों में रहकर अपना जीवन बसर करते थे। आज भी हम मानवता की भलाई व रक्षा के लिए ये सब कार्य करने को तैयार हैं।[10] स्वामी विवेकानन्द ने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए कार्य किया। उन्होंने स्त्री षिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया। उनका मत था कि भारत में प्राचीन समय में भी स्त्रियों को उच्च षिक्षा के लिए षिक्षण संस्थान थे। विवेकानन्द जी महिलाओं के पाठ्यक्रम में उन विषयों को उपयोगी मानते थे। जो उनके जीवनोपयोगी व सामाजिक जीवन के स्तर को ऊँचा उठाए। इसके साथ–साथ उन्होंने अपने अनुयायियों को चिकित्सालय व अनाथ आश्रम खोलने के लिए प्रेरित किया। जिसे समाज का भला हो सके। लोग स्वस्थ जीवन यापन करें। यह सब कार्य उन्होंने रामकृश्ण मिषन के माध्यम से करवाये। अब रामकृश्ण मिषन विवेकानन्द के प्रयासों से भारत व विष्व में फैल चुका था। आज भारत सहित विष्व में इसकी 118 शाखाएँ हैं। रामकृष्ण मिषन ने विष्व में पुनर्जागरण लाने में अपनी जो भूमिका अदा की वह उस समय किस भी संगठन द्वारा नहीं की गई थी। आज भी भारत व अन्य कई देषों में ये शाखाएँ मानव कल्याण के लिए कार्य कर रही हैं।[11]

## संदर्भ


1. गुप्त राजेन्द्र प्रसाद, :– स्वामी विवेकानन्दः व्यक्ति और विचार, राधा, पब्लिकेषन, भाग 1, नई दिल्ली 1997 पृ08.
2. विवेकानन्द साहित्यः– खण्ड 3 पृ0 41.
3. गुप्त राजेन्द्र प्रसाद, :– स्वामी विवेकानन्दः व्यक्ति और विचार, राधा, पब्लिकेषन, भाग 1, नई दिल्ली 1997 पृ08.
4. शैली रोमा :– पूर्व उद्धत् पृ0 16
5. कुमार गुप्त राजेन्द्र :– पृ09
6. कृष्ण रमेष आचार्य :– पृ055
7. स्वामी अपूर्वानन्दः– पूर्व उद्धृत, पृ0 84
8. चकवर्ती श्री शरच्चन्द्रः– विवेकानन्द जी के संग में (वार्तालाप), पृ050 अनुवादक– श्री एम0
   एम0 गोस्वामी, नवम संस्करण, प्रकाशक– स्वामी व्योमरूपानन्द, अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर।
9. रौमा, रौमला, :– पूर्व उद्धृत, पृ0 94.
10. आर0 सी0 मजूमदार, :– पूर्व उद्धृत, पृ0 137.
11. स्वामी अपूर्वानन्दः– पूर्व उद्धृत, पृ0 133